International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-06-2021, Accepted: 13-07-2021, Published: 27-07-2021
Volume 7, Issue 4, 2021; Page No. 57-62

मृदु शक्ति कुटनीति के परिप्रेक्ष्य में बौद्ध धर्म की अहमियत एवं अपरिहार्यता

डॉ. सुभाष भिमराव दोंदे
सहयोगी प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान प्रभाग, किर्ति महाविद्यालय, दादर (प.) मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
वैश्विकरण एवं डिजिटल क्रांति के वर्तमान युग में राष्ट्रों के बीच बढ़ते संपर्क एवं सद्भाव के मद्देनजर 'सौम्य या मृदु शक्ति' (सॉफ्ट पॉवर) ने विश्व के विभिन्न देशों की विदेश नीति में विशिष्ट स्थान हासिल कर लिया है। कूटनीति के इस प्रतिमान स्थानांतरण में बौद्ध धर्म के अहिंसा, शांति और सहिष्णुता जैसे केंद्रीय सिद्धांत इसे संभावित मृदु-शक्ति का एक समृद्ध स्रोत बनाते हैं। भारत से उद्भवित होकर, पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों में फैलनेवाला बौद्ध धर्म विश्व का एक प्रमुख धर्म है, जिसका पूरी दुनिया में गहरा प्रभाव और अद्भुत लोकप्रियता है। एशिया महाद्वीप में बौद्धों की कुल आबादी 98 प्रतिशत होने की वजह से बौद्ध धर्म किसी भी एशियायी महासत्ता की मृदु शक्ति को समृद्ध करने में सबसे प्रमुख और प्रबल दावेदार है। इसी दूरदृष्टि से महत्वकांक्षी 'बेल्ट एंड रोड पहल' परियोजना को वैश्विक समर्थन जुटाने के लिए और अपनी छवि को अन्य बौध्द देशों में अधिकाधिक मुलायम एवं शिरोधार्य बनाने के लिए अनीश्वरवादी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने कुटनीतिक उद्देश्यों के लिए बौद्ध धर्म को अपनाया है और इसे मृदु शक्ति का कारगर जरिया बनाकर संपूर्ण एशिया को अपने अधीन करने के मंसूबे और प्रयास में वो सफल हुआ है। बौद्ध वैश्वीकरण और कूटनीति, जो मूल रूप से एक जमाने में अशोक और कनिष्क जैसे भारतीय सम्राटों द्वारा प्रचलित थी, आज चीनियों द्वारा अपने मृदु-शक्ति के कुटिनीतिक खेल में प्रभुत्व के साथ आजमाई जा रही है। बौद्ध धर्म के पारंपरिक संघ अनुशासन के लिए एक विश्वसनीय संस्था की कमी भारतीय सांस्कृतिक कूटनीति को बार-बार विफलता की ओर ले जाती है । इसलिए बौद्ध दुनिया के साथ जुड़ने लिये भारत को एक सशक्त एवं सक्षम 'संघ' की आवश्यकता है। इसके अलावा सदियों पुराने खंडहर बने बौद्ध के पवित्र विरासत पर्यटन स्थलों का पुनरुद्धार या पुनःस्थापन करने की जरूरत है। बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक परंपराओं को गहराई से अपनाने और उसका वैश्विक प्रक्षेपण करने के लिए तथागत बुध्द द्वारा आविष्कृत 'विपश्यना' ध्यान प्रणाली को विश्व के सामने दृढ़ता पूर्वक प्रस्तुत करने और बुद्ध की भूमि से इसे एक अनमोल उपहार के रूप में प्रचारित करने की जरूरत है। बौद्ध धर्म प्राचीन भारत का अनमोल भू-राजनीतिक साधन है, जिसकी उपयोगिता उस दौर से कई ज्यादा आज इस सहस्राब्दी की चुनौतियों का सामना करने में कारगर स्थापित हो सकती है और इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अनुसंधान लेख में मृदु शक्ति कुटनीति में बौद्ध धर्म की अहमियत और अपरिहार्यता को तथ्यों के आधार पर उजागर किया है।

मूलशब्द: मृदु शक्ति, कुटनीति, बेल्ट एंड रोड, विपश्यना, बौद्ध धर्म, चीन, जोसेफ न्ये

प्रस्तावना

जनसंचार, वैश्विक व्यापार, पर्यटन और पारस्परिक सतत विकास के मौजूदा दौर में सौम्य या मृदु शक्ति (सॉफ्ट पॉवर) की अवधारणा ने विश्व के विभिन्न देशों की विदेश नीति में विशिष्ट स्थान हासिल कर लिया है। शांतिपूर्ण सहयोग, संघर्ष और टकराव से बचना कई देशों और क्षेत्रों की विदेश नीति में मुख्य प्रवृत्ति बनी है। इसलिए, राष्ट्रीय छवि, शक्ति और स्थिति को वृद्धिंगत करने के लिए मृदु शक्ति के स्रोत के रूप में सांस्कृतिक शक्ति का उपयोग विशेष रूप से २१वी सदी में अंतरराष्ट्रीय संबंधों में केंद्रित है। मुख्यतः हथियारों और प्रतिबंधों पर निर्भर करती कठोर शक्ति के स्थान पर मृदु शक्ति के प्रयोग को अधिक सहूलियत भरा माना जाता है। डिजिटल क्रांति के वर्तमान युग में राष्ट्रों के बीच संपर्क एवं सद्भाव का महत्त्व बढ़ता जा रहा है, इस परिप्रेक्ष्य में मृदु शक्ति रणनीतियाँ ही उचित मानी जा रही हैं। मृदु शक्ति की अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध राजनीतिक विशेषज्ञ 'जोसेफ न्ये' द्वारा विकसित किया गया था। मृदु शक्ति खासकर अमूर्त चीजों जैसे- सांस्कृतिक गतिविधियों, योग साधना, बौद्ध धर्म, सिनेमा, सूफी संगीत, क्रिकेट, आयुर्वेद, विपश्यना, गांधीवादी आदर्श- जैसे अहिंसा,

लोकतांत्रिक विचारों आदि पर आधारित होती है। इस अवधारणा का महत्त्व शीत-युद्ध के समाप्ती पश्चात काफी अधिक बढ़ गया है।

भारतीय सभ्यता ने दुनिया में कई प्रमुख धर्मों को जन्म दिया है और समय के साथ कई अन्य धर्मों को अपने सामाजिक ताने-बाने में आत्मसात कर लिया है। उपमहाद्वीप में सहस्राब्दियों से विकसित हुए विज्ञान, आध्यात्मिकता, कला और आस्था ने अन्य मुल्कों में अपना रास्ता खोज लिया, जिससे मृदु-शक्ति की अवधारणा आविष्कृत होने से बहुत पहले भारत को इस क्षेत्र में काफी मात्रा में माहिरता हासिल हुई थी। स्वतंत्रता के बाद 1950 के दशक में, अपने स्वयं के गुटनिरपेक्षता के विचारों से पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की अंतर्राष्ट्रीय छवि को नया आयाम दिया। मिस्र के गमाल नासेर और इंडोनेशिया के सुकर्णो जैसे अन्य तीसरी दुनिया के नेताओं के साथ काम करते हुए, नेहरू ने तर्क दिया कि अन्य देशों को अमेरिका और सोवियत संघ के बीच चल रहे शीत-युद्ध में पक्ष लेने की जरूरत नहीं है, जो बुद्ध के 'मध्यम-मार्ग' (middle path) समकक्ष भू-राजनीतिक विचारधारा थी। यह लंबे समय तक चलने या नही चलने वाला एक काल्पनिक आदर्श (utopian) था, लेकिन जब यह चला तो भारत ने समस्त विश्व का ध्यान आकर्षित किया।

बौद्ध धर्म मूलभूत एशियाई मूल्यों को रेखांकित करता है। धम्म के 98 प्रतिशत अनुयायी एशिया-प्रशांत क्षेत्र में रहते हैं। चौदह एशियाई देश अपनी आबादी में 50% से अधिक बौद्ध हैं, जिनमें से सात में 90 % से अधिक उनकी आबादी बौद्ध धर्म का पालन करती है। आज भूटान, म्यांमार (ब्रम्हदेश), थाईलैंड और श्रीलंका जैसे कई देश बौद्ध धर्म को अपने राष्ट्रीय मूल्यों और अनुपम अंतर्राष्ट्रीय पहचान का स्रोत मानते हैं। इसी संदर्भ में अपनी विदेश नीति के भीतर और अधिक राजनयिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंधों का आधार बनाने के लिए बौद्ध विरासत को शामिल करने के प्रति किसी भी एशियायी महाशक्तियों के प्रयासों को समझा जा सकता है। स्वाभाविकता से राजनीतिक महत्व एवं महत्वकांक्षाओं के अधिकांश अन्य क्षेत्रों की तरह, भारत ने बौद्ध कूटनीति के क्षेत्र में चीन से कड़ी प्रतिस्पर्धा पाई है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि चीन भी, कई दशकों के अंतराल के बाद, उनके नैतिक और सामाजिक ताने-बाने की गहराई उधेड़ने से पहले संघ के आदर्शों को लागू करने के लिए उत्साह से अब त्रिरत्नों (बुद्ध धम्म और संघ) की शरण ले रहा है। चीन काफी अरसे से अपने आर्थिक गौरव या प्रभाव को आध्यात्मिक शक्ति में बदल रहा हैं। वैश्विक स्तर पर बौद्ध धर्म के माध्यम से अन्य राष्ट्रों के लोगों के साथ मनोवैज्ञानिक संबंध बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते हुए चीन खुद को बौद्ध धर्म का एक मात्र मुख्य संरक्षक के रूप में आक्रामकता से पेश कर रहा हैं।

परिकल्पना

अहिंसा, शांति, सहिष्णुता तथा वैज्ञानिक या तर्कसंगत दृष्टिकोण जैसे अंतर्निहित केंद्रीय सिद्धान्त 'बौद्ध धर्म' को हर तरह से मृदु-शक्ति का समृद्ध स्रोत बनाते है; दूसरी तरफ एशिया में बौद्ध धर्मियों की कुल आबादी 98 प्रतिशत है। इस पृष्ठभूमि में मृदु-शक्ति आधारित कूटनीति के इस युग में बौध्द धर्म की अहमियत और अपरिहार्यता अद्वितीय या अतुल्य है ।

क्रिया-विधि

प्रस्तुत लेख गुणात्मक विषय वस्तु विश्लेषण के दायरे में असंरचित और गैर-संख्यात्मक डेटा पर निर्भर रहकर समस्या के सटीक स्वरूप को हल करने के लिए इस क्षेत्र के विख्यात भारतीय कुटनीतिक विशेषज्ञों एवं अनुसंधान कर्ताओं के संदर्भ सूचीबद्ध प्राथमिक एवं प्रकाशित साहित्य या डेटा का समीक्षात्मक अध्ययन है।

विचार विमर्श

बौद्ध मृदु शक्ति को लेकर चीन की सोच एवं प्रयास

मृदु शक्ति के परिपेक्ष्य में समकालीन भारत को चीन ने काफी दूरी तक पीछे छोड़ दिया है और इसके बारे में अंक-विवरन ही सब कहानी बयाँ करते है। कुटनीतिक प्रभाव में, कुल मिलाकर, भारत 25 एशियाई शक्तियों में छठे स्थान पर है और चीन पहले स्थान पर है। कुटनीतिक नेटवर्क के संबंध में, भारत अपने क्षेत्रीय दूतावासों की संख्या में चीन से लगभग मेल खाता है, लेकिन दुनिया भर में दूतावासों की संख्या (176 से 126) में काफी पीछे है। इसके अलावा महत्वपूर्ण रूप से, संयुक्त राष्ट्र के पूंजी बजट में भारत का योगदान (0.8%) चीनी योगदान (11.7%) से पूरी तरह से बौना है। शीर्ष 500 वैश्विक ब्रैंडो की सूची में भारत के केवल 9 ब्रैंड हैं जबकि चीन के 73 ब्रैंड है। यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की संख्या में, भारत में 37 है जबकि चीन में 53 स्थल है। भारतीय पासपोर्ट का सम्मान भी पिछड़ा हुआ है। चीनी नागरिक बिना वीजा (प्रवेशानुज्ञा) के 74 देशों की यात्रा कर सकते हैं जबकि भारतीय केवल 60 देशों में वीजा मुक्त यात्रा कर सकते हैं। ज्ञान की धारा (प्रवाह) के संदर्भ में, 2016-17 में, भारत ने तृतीयक शिक्षा संस्थानों में केवल 24,000 एशियाई छात्रों की मेजबानी की, जबकि चीन ने 2,25,000 की मतलब 10 गुना अधिक छात्रों की मेजबानी की। पर्यटकों के आगमन के लिए, 2017 में भारत ने एशिया

से 5 मिलियन आगमन देखे, जबकि चीन ने 8 गुना अधिक याने 41 मिलियन आगमन देखे और 25 एशियाई देशों में वो पहले स्थान पर रहा। मृदु शक्ति के संदर्भ में भारत और चीन के बीच तुलना संमिश्र है -कुल मिलाकर चीन भारत से कहीं अधिक है, हालांकि कुछ मामलों में अंतर बड़ा नहीं है। अंतरराष्ट्रीय मामलों, क्षेत्रीय भू-राजनीति, वैश्विक और एशियाई अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी, और यहां तक कि समकालीन संस्कृति से संबंधित किसी भी बातचीत में ऐसा नही है की चीन अनुपस्थित है। किन्तु भारत के लिए यह विश्वास से नही कहा जा सकता है। यदि आप बातचीत में भी नहीं हैं तो आपके पास मृदु-शक्ति नहीं हो सकती है।

चीन 1 ट्रिलियन डॉलर्स लागत के 'बेल्ट एंड रोड पहल' (Belt & Road Initiative) के रूप में मृदु शक्ति के प्रयोग का दिखावा पेश कर रहा है, जिसका गोपनीय उद्देश्य विकास के नाम पर छोटे देशों को चीन पर निर्भर बनाना है ताकि वे चीन की नीतियों का समर्थन करें। इस परियोजना को नव-साम्राज्यवाद का एक रूप होने पर चिंता जताई गई है। कुछ पश्चिमी सरकारों ने बेल्ट एंड रोड उपक्रम पर नव-औपनिवेशिक होने का आरोप लगाया है क्योंकि वे आरोप लगाते हैं कि चीन की पहल की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को निधि देने के लिए 'ऋण-जाल' (debt trap) कूटनीति की चालाकी है। चीन ने 'बेल्ट एंड रोड' उपक्रम से प्रभावित देशों में बौद्ध सार्वजनिक कूटनीति प्रयासों को और बढ़ावा दिया है, उम्मीद है कि बौद्ध धर्म स्थानीय आबादी की नजर में चीन की छवि को मुलायम करेगा, और उन देशों को विश्वास दिलाएगा कि वैश्विक शक्ति के रूप में चीन का उदय दरअसल एक शांतिदूत के रूप में है। इस परियोजना के असली प्रयोजन के बारे में कोई संदेह ना हो और बौद्ध आबादी वाले देशों में इसका खुलकर स्वागत हो इसलिये चीन अपने मृदु शक्ति में बौद्ध विरासत पर जोर दे रही है। भगवान बुध्द का जन्मस्थल नेपाल स्थित लुम्बिनी यह दुनिया भर के बौद्धों के लिए एक प्रमुख तीर्थस्थल है। चीन ने लुंबिनी के विकास एवं विस्तार परियोजना के लिए 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर की पेशकश की जिसके कारण नेपाल ने खुशी-खुशी बेल्ट एंड रोड का स्वागत किया है। लुम्बिनी शहर को चीन बौद्धों की 'मक्का' या सामूहिक तीर्थस्थल के रूप में विकसित करने करने की कोशिश कर रहा है। इस परियोजना को बढ़ावा देने के पीछे चीनी सरकार की एक छुपी कार्यसूची (hidden agenda) है। लुंबिनी ने 2017 में 1.55 मिलियन पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को आकर्षित किया था। चीन अपने नए रिवायत (narrative) के माध्यम से भारत के बिहार राज्य के बोधगया से 2.3 करोड़ पर्यटकों को लुंबिनी की ओर मोड़ने की उम्मीद करता है- बोधगया जहाँ बुध्द को ज्ञानोद्दीप्ति प्राप्त हुई थी की बजाय बुद्ध के जन्मस्थान लुम्बिनी का अधिक महत्व दर्शाकर । 2023 तक काठमांडू को तिब्बत से आने वाली रेल्वे लाइन से जोड़कर, चीनी और नेपाली सरकार नेपाल, तिब्बत और चीन में बौद्ध स्थलों से आने-जाने वाले तीर्थयात्रियों के यातायात को बढ़ावा देगी। किंतु लुंबिनी की भारतीय सीमा से निकटता को देखते हुए, भारत में चिंता है कि भारतीय सीमा के इतने करीब चीनी उपस्थिति से भारत के लिए सुरक्षा निहितार्थ होंगे।

बीजिंग में मौजूदा नेतृत्व के तहत, चीन दोनों- अपने घरेलू संकट को हल करने और मृदु-शक्ति आधारित कुटनीतिक संबंधों में बौद्ध धर्म को एक प्राणाधार संपत्ति के रूप में उपयोग में ला रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, बौद्ध जगत में चीन के प्रभुत्व एवं नेतृत्व की रिवायत चीन में बौद्ध संस्थानों के निर्माण में भारी निवेश और बौद्ध देशों के साथ इसके अनुबंध से उत्पन्न होती है। सन 2006 से हर तीन साल बाद, चीन अन्य देशों के बौद्ध विद्वानों और छात्रों को आमंत्रित करके विश्व बौद्ध मंच की कार्यसूची के साथ सक्रिय रूप से संलग्न करता है। मंच - जो कथित तौर पर, चीनी मुख्य भूमि, तैवान और हाँगकाँग के शीर्ष आठ बौद्ध आचार्यों द्वारा कल्पना की गई - बीजिंग के रणनीतिक हितों की सेवा करता है। बौद्ध जगत में चीन के कद और प्रभाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह मंच एक प्रमुख कार्यक्रम बन गया है। इसके अलावा नीति में एक प्रतीप मोड़ के तहत चीन ने हाँगकाँग और तैवान में विध्वस्त बुध्द मंदिरों के पुनरुद्धार का समर्थन किया है। बीजिंग को उम्मीद है कि इस तरह के प्रयास उसे खुद को चीन की बौद्ध विरासत के संरक्षक के रूप में पेश करने की अनुमति देंगे, और बदले में यह तैवान और हाँगकाँग के लोगों के बीच पुनर्मिलन के लिए समर्थन को मजबूत करेगा। कुछ बौद्ध समुदायों में, पवित्र अवशेषों की पूजा - अक्सर मानव अवशेष- बुद्ध या अन्य सम्मानित भिक्षुओं और विद्वानों का या जिन वस्तुओं का उन्होंने उपयोग किया था; यह लोकप्रिय धार्मिक भक्ति का एक हिस्सा हैं। 1950 के दशक से, चीन ने अन्य देशों में प्रदर्शन के लिए बौद्ध अवशेषों को भेजा है - एक प्रथा जिसे 'अवशेष कूटनीति' के रूप में जाना जाता है, जिसका उद्देश्य सार्वजनिक सद्भावना जीतना है। 2011 में, जब माइट्सोन (Myitsone) बांध परियोजना के विरोध में म्यांमार में चीन विरोधी भावना की लहर उठी, तो चीन ने म्यांमार के 48-दिवसीय दौरे पर बुद्ध के दांत के अवशेष भेजे। इसने चीन में लिंगग्वान्ग (Lingguang) मंदिर, जहां बुद्ध के दांत के अवशेष

रहते हैं, और यांगून में श्वेडागन (Shwedagon) पगोडा के बीच संबंधों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। चीन श्रीलंका की राजधानी कोलंबो में 350 मीटर ऊंचे 'लोटस टॉवर' का निर्माण कर रहा है। पद्म (lotus) सूत्र के सम्मान में नामित, इमारत का डिजाइन बौद्ध धर्म से प्रेरणा लेता है, जो श्रीलंका के बहुसंख्यक सिंहली समुदाय का धर्म है । लोटस टॉवर बौद्ध धर्म के माध्यम से श्रीलंकाई लोगों के लिए दो सहस्राब्दी पुराने चीन-श्रीलंका संबंधों के अनुस्मारक और साथ-साथ चीन के महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड पहल के माध्यम से उनके साझा भाग्य के रूप में कार्य करता है। चीन में बौद्ध धर्म को मानने वालों की संख्या आश्चर्यजनक रूप से बढ़ी है। यहाँ बौद्ध धर्म और ताओवाद (Taoism) के संयोजन को मानने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग एक अरब (बिलियन) होगी। वास्तव में, चीनियों के लिए, बुद्ध न केवल एक शिक्षक हैं, बल्कि मोक्ष या निर्वाण चाहने वालों द्वारा पूजे जाने वाले भगवान भी हैं। चीन अब लिंगशन (Lingshan) शहर को बौद्ध धर्म के लिए 'वेटिकन' के रूप में बनाने की योजना बना रहा है। भारत पर अपनी रणनीतिक नजर रखते हुए, बीजिंग ने इस साल पाकिस्तान को 'गांधार ट्रेल' को पुनर्जीवित करने के लिए एक परियोजना शुरू करने के लिए प्रेरित किया है। श्रीलंका ने बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर पाकिस्तान के तक्षशिला में एक बौद्ध प्रतिनिधिमंडल भेजा, जबकि शीर्ष भूटानी भिक्षुओं ने स्वात (Swat) घाटी (गुरु पद्मसंभवा की जन्मस्थली) में सैदु शरीफ मठ का दौरा किया। द्विदेशीय आदान प्रदान में पाकिस्तान ने भी वैशाख महीने के दौरान श्रीलंका में सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए तक्षशिला से सबसे पवित्र बुद्ध अवशेष भेजे थे। भारत के संदर्भ ने यह एक निराशामय विडंबना है कि बौद्ध वैश्वीकरण और कूटनीति, जो मूल रूप से एक जमाने में अशोक और कनिष्क जैसे भारतीय सम्राटों द्वारा प्रचलित थी, आज चीनियों द्वारा अपने मृदु-शक्ति के कुटिनीतिक खेल में प्रभुत्व के साथ आजमाई जा रही है। बीजिंग ने मित्र देशों के बौद्ध संस्थानों की मरम्मत, जीर्णोद्धार, पुनरुत्थान और यहां तक कि नए बौद्ध संस्थानों के निर्माण में मदद करना शुरू कर दिया है। भले ही चीन अर्थव्यवस्था और सेना के मामले में एशिया का सबसे मजबूत देश हो, लेकिन इसकी बौद्ध विरासत का प्रक्षेपण एशिया में सांस्कृतिक जीवन पर इसके प्रभाव को आगे बढ़ाने की उसकी इच्छा को पूरा करता है।

बौद्ध मृदु शक्ति को लेकर भारत की यथार्तता

'बुद्ध, धम्म, संघ' या त्रिरत्न युगों से एशियाई समाजों की अंतर्निहित आध्यात्मिक और नैतिक नींव को परिभाषित करते हैं यह भूलकर भारत में अक्सर यह गलती की जाती है कि बौद्ध धर्म को एक पराया या प्रतिद्वंद्वी धर्म माना जाता है। यह विडंबना ही है कि बुद्धनेट की विश्व बौद्ध निर्देशिका किसी भी प्रमुख बौद्ध वंश - थेरवाद, महायान, झेन या तिब्बती वज्रयान में विश्व के शीर्ष आचार्यों में एक भी भारतीय को सूचीबद्ध नहीं करती है। यह उस मुल्क में बौद्ध धर्म की दयनीय स्थिति को दर्शाता है जहां सिद्धार्थ ने ज्ञानोद्दीप्ति प्राप्त की थी। अनुपाती तौर पर भारत बौद्धों की अपेक्षाकृत कम आबादी का मेजबान है, इस तथ्य के बावजूद भारत कई कारणों से बौद्ध कूटनीति को बढ़ावा देने में वैधता या यथार्थता का दावा करने की स्थिति में है। सबसे पहले, बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत में हुई, इसलिए इसे अद्वितीय ऐतिहासिक यथार्थता प्राप्त है। दूसरा, भारत में बौद्ध धर्म के लिए महत्व के कई स्थल हैं, जैसे बोधगया, सारनाथ और नालंदा। तीसरा, दलाई लामा और निर्वासित तिब्बतीयों की धर्मशाला शहर में उपस्थिति के कारण भारत ने उत्पीड़ितों का रक्षक होने की अंतराष्ट्रीय छवि विकसित की है । तिब्बती बौद्ध धर्म के साथ अच्छे संबंधों के अलावा, थेरवाद बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक संबंधों का अर्थ है कि भारत अन्य बौद्ध देशों के साथ संबंधों को आगे बढ़ाने और इस धर्म की कई धाराओं के बीच बातचीत करने की अच्छी स्थिति में है। अन्य बौद्ध देशों के साथ इन संबंधों का सफलतापूर्वक लाभ उठाने से सांस्कृतिक कूटनीति के दायरे से परे प्रभाव पड़ सकता है, और विदेश नीति के अन्य क्षेत्रों में भी सहायता मिल सकती है। दिलचस्प बात यह है कि बौद्ध धर्म और राज्य की कूटनीति के बीच संबंध कोई नया नहीं है, और सम्राट अशोक के दिनों का है, जिन्होंने धर्म को अपनाने के बाद धर्म-विजय या धर्म के माध्यम से विजय का अभ्यास शुरू किया था। बौद्ध धर्म के जरिये एशियाई राष्ट्रों के साथ संबंधों को गहरा करने से सरकार के बड़े नीतिगत उद्देश्यों, अर्थात् 'पड़ोसी पहले' नीति और 'एक्ट ईस्ट' नीति को बढ़ावा मिल सकता है। बौद्ध कूटनीति के क्षेत्र में भारत और चीन की प्रतिद्वंद्विता की सबसे प्रमुख अभिव्यक्ति दलाई लामा के मुद्दे से संबंधित है। उत्तर भारत में धर्मशाला में दलाई लामा और निर्वासित तिब्बती सरकार की उपस्थिति ने वैश्विक बौद्ध समुदाय में भारत की छवि को मजबूत किया है। हालाँकि, यह देखते हुए कि चीनी राष्ट्र दलाई लामा और उनके अनुयायियों को 'चीन विरोधी विभाजनवादी प्रकृति' के रूप में मानता है, जो चीनी प्रभुसत्ता के लिए खतरा है, यह दोनों देशों के बीच विवाद का एक स्रोत रहा है। उदाहरण के लिए 2011 में, भारत ने बुद्ध के ज्ञानोद्दीप्ति की 2,600 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वैश्विक बौद्ध

समुदायों की मेजबानी की। यह आयोजन 50 से अधिक वर्षों में भारत द्वारा आयोजित पहला बड़ा बौद्ध सम्मेलन था, और इसलिए भारत के बौद्ध कूटनीति प्रयासों के लिए निर्णायक महत्व का था। इस आयोजन में दलाई लामा की भागीदारी पर चीनियों ने कड़ी आपत्ति जताई थी, जिन्होंने उसी महीने भारत के साथ होने वाली सीमा वार्ता को रद्द कर दिया था। 2017 की शुरुआत में भी इसी तरह की दो घटनाएं हुई थीं। मार्च में, दलाई लामा को बिहार के राजगीर में '21वीं सदी में बौद्ध धर्म' पर एक सेमिनार के उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया गया था। इस अधिनियम की चीनी राज्य द्वारा निंदा की गई जिसने भारत से चीन की मुख्य चिंताओं का सम्मान करने और चीन-भारत संबंधों को और अधिक बाधित और कमजोर होने से बचने का आग्रह किया। हालांकि, भारतीय मृदू शक्ती की क्षमता बहुत अधिक है, लेकिन इसका उपयोग अबतक कम ही किया गया है। भारत को बुद्ध और उनके दर्शन, जिसमें 'विपश्यना' की उनकी प्रथा शामिल है, को एक भारतीय वैचारिक, दार्शनिक और जीवन शैली के रूप में दुनिया को बड़े पैमाने पर निर्यात करना चाहिए। विपश्यना यह विश्व की सबसे पुरानी सर्व-धार्मिक, सर्व-कालिक, सर्व-भाषिक, एवं सर्व-देशिक ध्यान-धारणा पद्धती है जो लगभग 2,500 साल पुरानी है। इसे स्वयं बुद्ध द्वारा स्वयं-अनुभवातीत अनुसंधान द्वारा विकसित किया गया था और यह बौद्ध दर्शन और अभ्यास का एक अभिन्न अंग है। यह किसी भी मानव को बुद्ध के समकक्ष 'ज्ञानोद्दीप्ति' की मंजिल तक लेकर जाने वाला स्वयंप्रकाशित राजमार्ग है। विपश्यना, एक अवधारणा के रूप में, प्रकृति में भी धर्मनिरपेक्ष है और यह एक ऐसी तकनीक है जो किसी धर्म से बंधी नहीं है। शुरू से लेकर अंत तक विपश्यना से जुड़ी हर बात पूर्ण रूपसे कार्यकारण भाव पर जाँची जा सकती है जो इसका पूर्णतः वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत होने का और प्रकृति के नियमों नुसार होने का सच्चा प्रमाण है। वैज्ञानिक अध्ययनों ने ऐसे विपश्यना से मानसिक परिवर्तनो के अनगिनत मनोकायिक लाभों को स्विकार किया है। फ़िलहाल बौद्ध धर्म अब निश्चित रूप से एक रणनीतिक या कूटनीतिक आयाम प्राप्त कर रहा है और, खेल में एक गंभीर खिलाड़ी होने के लिए, भारत को दिखावे से अधिक की आवश्यकता है। गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से दिखावे के शैली के कार्यक्रम और सम्मेलनों द्वारा मरम्मती पहल जो न तो अध्यात्मवाद और न ही बौद्ध विद्वता की गहराई तक पहुँचती हैं, अंततः विफलता में समाप्त होती हैं।

उपसंहार

भारत को अपनी केंद्रीय भूमिका की गंभीरता से पुष्टि करने के लिए, उसे अपने स्वयं के बौद्ध संघ (बौद्ध परिषद) को मजबूती से उभरने में मदद करनी चाहिए। बौद्ध धर्म या पारंपरिक संघ अनुशासन के समर्थन के लिए भारत में एक विश्वसनीय संस्था की कमी भारतीय सांस्कृतिक कूटनीति को बार-बार विफलता की ओर ले जाती है। अनावश्यक गतिविधियों पर संसाधनों को बर्बाद करने के बजाय, भारत सरकार को अपने तत्वावधान में राष्ट्रपति या प्रधान मंत्री के साथ परिषद की अध्यक्षता करने के लिए एक संघ स्थापित करने की योजना बनानी चाहिए। संघ प्रणाली की शक्तिशाली संस्था के माध्यम से ही भारत बौद्ध दुनिया के साथ फिर से जुड़ने और नेतृत्व की अपनी भूमिका को बनाए रखने में सक्षम होगा। भारत को महायान बौद्ध संघ (परिषद) बनाने की एक प्रबल वस्तुस्थिति है। यह न केवल घरेलू स्तर पर बौद्ध धर्म से संबंधित मामलों की जटिलताओं को संभालने के लिए है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत के मृदु शक्ति प्रक्षेपण के समन्वयन लिए भी आवश्यक है। इस परिषद को हिमालयी बौद्ध धर्म और पूरे देश में फैले अन्य संस्थानों से तराशा जा सकता है। भारत को सदियों पुराने खंडहर बने पर्यटक बौद्ध विरासत स्थलों का पुनरुद्धार या पुनःस्थापन करने के लिए तत्काल कदम उठाने की जरूरत है।

वे लाखों लोगों की आध्यात्मिक मुकद्दर से सीधे जुड़े हुए हैं। बुनियादी ढांचे और संयोजकता में सुधार करके, भारत एशियाई तीर्थयात्रियों की क्षमता का दोहन कर सकता है। यह हमारे लाखों युवाओं को आकर्षक रोजगार प्रदान कर सकता है। इसके अलावा यह महत्वपूर्ण है कि भारत ध्यान-धारणा का सबसे समग्रतात्मक परिष्कृत, वैज्ञानिक, धर्मनिरपेक्ष और प्राचीन रूप में विपश्यना को विश्व के सामने दृढ़ता पूर्वक प्रस्तुत करे। इसे मुख्य रूप से उच्चतम स्तर की वास्तविकता और प्रभावशीलता के साथ एक कर्मता (niche) भारतीय अभ्यास के रूप में विपणन किया जाना चाहिए, और दुनिया के लिए बुद्ध की भूमि से एक अनमोल उपहार के रूप में प्रचारित किया जाना चाहिए। अंततः बौद्ध धर्म प्राचीन भारत का अनमोल भू-राजनीतिक साधन है जिसकी उपयोगिता उस दौर से कई ज्यादा आज इस सहस्राब्दी की चुनौतियों का सामना करने में कारगर स्थापित हो सकती है। आज विश्व को 'युद्ध' की नही तो 'बुद्ध' की आवश्यकता है और इसी में बौद्ध धर्म की अहमियत एवं अपरिहार्यता अंतर्निहित है।

अभिस्वीकृति
प्रस्तुत अनुसंधान लेख तथागत भगवान बुद्ध की विश्व-कल्याणी ध्यान प्रणाली -'विपश्यना' को भारत मे पुनरुज्जीवित करने के लिए विश्व-वंदनीय गुरूदेव 'सयाग्जी उ बा खिन' (Sayagyi U Ba Khin) और उनके शिष्य विपश्यनाचार्य 'सत्य नारायण गोयन्काजी' के पावन स्मृति में श्रद्धापूर्वक अर्पण है।

संदर्भ सूची

1. रामचंद्रन सुधा (5 मार्च 2019) रायवलरीज एंड रेलिक्स: एक एक्ज़ामिनिंग चायनाज बुद्धिस्ट पब्लिक डिप्लोमेसी चायना ब्रीफ खंड: 19 अंक: 5 https://jamestown.org/program/rivalries-and-relics-examining-chinas-buddhist-public-diplomacy/
2. स्टोब्डन पी. (29 नवम्बर 2016) टू डिप्लॉय सॉफ्ट पॉवर ऑफ बुद्धिज़्म, इंडिया निड्स तो एम्ब्रेस दी संघ. दी वायर https://web.archive.org/ web/ 20170603005858/https://thewire.in/83060/buddhism-soft-power-india-china/
3. घोष बॉबी (25 सप्टेंबर 2014) फ्रॉम दी बुद्धा टू बॉलीवुड टू बीपीओज: अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ इंडियाज सॉफ्ट पॉवर. https://web.archive.org/web/20141013015016/http://qz.com/271585/from-the-buddha-to-bollywood-to-bpos-a-brief-history-of-indias-soft-power/
4. बाजपेयी कांति (23 जून 2021) व्हाई डज़ चायना कंसिस्टेंटली बिट इंडिया ऑन सॉफ्ट पॉवर इंडियन एक्सप्रेस https://www.indianexpress.com/article/opinion/columns/why-does-china-consistently-beat-india-on-soft-power-7371094/lite/
5. खोब्रागडे देवयानी (30 अप्रैल 2018) इंडिया शुड रेक्लेम बुद्धाज फिलॉसफी एंड विपश्यना टू बिल्ड सॉफ्ट पॉवर. दी वायर https://www.m.thewire.in/article/diplomacy/buddhism-india-philosophy-vipassana-soft-power/am
6. भारत की 'सॉफ्ट पॉवर' (27th जनवरी 2020) दृष्टि https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/india-soft-power
7. किश्वर शांतनु (23 फरवरी 2018) दी राइजिंग रोल ऑफ बुद्धिज़्म इन इंडियाज़ सॉफ्ट पॉवर स्ट्रैटेजी https://www.orfonline.org/research/the-rising-role-of-buddhism-in-indias-soft-power-strategy/
8. रिनजिन दोर्जी (29 अक्टूबर 2018) दी दलाई लामा एंड चायनाज क्वेस्ट फ़ॉर बुद्धिस्ट सॉफ्ट पॉवर दी डिप्लोमॅट https://thediplomat.com/2018/10/the-dalai-lama-and-chinas-quest-for-buddhist-soft-power/